JANUARY' 18

28 SUNDAY Day 028-337 Wk-04

बी.ए. II हिन्दी अनिवार्य

आधुनिक काल की साहित्यिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि

डॉ. सतीश चन्द्र पाठक

संक्षेप में बतलाया गया है कि द्विवेदीयुग की कविता रीतिकालीन काव्य की प्रतिक्रिया में लिखी जा रही थी जिसमें एक शृंगार की शुष्कता, आलोचना और स्वच्छन्दता अवश्य आवश्यक था। किन्तु गद्य के विकास की दृष्टि से यह काल महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। उस समय देश में पराधीनता के विरुद्ध संघर्ष आरंभ हो चुका था। एक ओर ही भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने यह घोषणा करदी थी कि —

'अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी
पर धन विदेश चलि जात यहै अति ख्वारी।''

अर्थात अंग्रेजों का शासन अनेक दृष्टियों से उत्तम था, सुख के साधन बढ़ गये थे किन्तु देश का धन विदेशों में जा रहा था यह अत्यन्त चिन्ता का विषय था। इधर देश में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हो चुकी थी और अंग्रेजों के विरुद्ध लोगों में सुगबुगाहट शुरू हो चुकी थी। साहित्य इस राष्ट्रीय चेतना से अछूता नहीं रह सकता था। यह राष्ट्रीय चेतना और राष्ट्रीय विचारों का विषय बन गया था जिसकी स्पष्ट छाप तत्कालीन साहित्य में देखी जा सकती है। इस काल में नाटक को छोड़कर के गद्य की विभिन्न विधाओं में पर्याप्त विकास हुआ किन्तु नाटक में अपेक्षित विकास नहीं हो पाया है कुछ अंग्रेजी नाटकों का अनुवाद ही इस काल में हो सका।

आचार्य द्विवेदी का प्रभुत्व बढ़ ~~[illegible]~~ भारतेन्दु था खड़ीबोली और ब्रजभाषा के विवाद का

notes
Phone
email
website